अध्याय-द्वितीय

समस्तित साहित्य एवं सर्वेक्षणों का अध्ययन
संबंधित साहित्य एवं सर्वेक्षणों का अध्ययन

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपने अनुभवों को संज्ञात करता है और फिर आवश्यकता पड़ने पर उनका समर्पण करके उनसे लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्तिगत अनुभवों के अतिरिक्त समाज के अन्य सदस्यों के भी अनुभव होते हैं—जिन्हें वे युग—युग से प्राप्त करते आये हैं। यह हमारी सामाजिक विरासत (Social Heridity) कहलाती है, यह पुस्तकों, पुस्तकों, प्रतिवेदनों और अनुसंधानों के रूप में सुरक्षित रखी जाती है।

संबंधित साहित्य से हमारा तात्पर्य उस साहित्य से है जिसमें प्रस्तावित समस्या अथवा उससे संबंधित किसी पक्ष की विवेचना की गयी हो, शोधकर्ता को सम्बन्धित साहित्य के विषय से ज्ञान प्राप्त कर लेना अति अवश्यक होता है। इस प्रकार का ज्ञान समस्या के निदान एवं सुधार प्रस्तुत करने में भी सहायक होता है, साथ ही साथ यह भी ज्ञात होता है किस प्रस्तावित क्षेत्र में कितना कार्य किया जा चुका है, और अभी क्या करने की सम्भावनायें हैं।

इस सम्बन्ध में गुड, बार एवं स्केट्स ने लिखा है कि सम्बन्ध साहित्य के सर्वेक्षण के पाँच उद्देश्य हो सकते हैं। प्रथम—यह प्रदर्शित करने के लिये कि आगामी अन्वेषण के बिना ही क्या उपलब्ध साक्ष्य समस्या का समाधान उपयुक्त ढंग से कर सकता है? इस प्रकार पुनरावृत्ति की शंका समाप्त हो जाती है, दूसरे—समस्या के व्यवस्थापन की दृष्टि से उपयोगी विवाद, सिद्धांत व्याख्या अथवा उपकल्पनाएं उपलब्ध कराना और तीसरे—समस्या के अनुकूल शोध प्रणाली प्रस्तावित कराना, वौधा—निष्कर्षों की व्याख्या करने में उपयोगी तथा तुलनात्मक प्रदत्त प्राप्त हो सकते हैं, पाँचवे—शोधकर्ता की सामाजिक जानकारी में वृद्धि हो सकती है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन कर लेने से नयी विधियों एवं उपकरणों का ज्ञान प्राप्त होता है, सन्दर्भित साहित्य के अध्ययन से शोध हेतु लिये गये विषय की
सीमाओं का ज्ञान प्राप्त होता है और अनावश्यक पुनरावृत्तियों से बचने का अवसर प्राप्त होता है, साहित्याध्ययन से शोधार्थिनी को जो अन्तर्दृष्टि प्राप्त हुई उससे समस्या के परिसमन, परिमाणकरण, एवं अनुसंधान विधि के चयन में लाभ हुआ।

इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन किया गया है, जो भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों, संस्थाओं, शिक्षाविदों, समाज वैज्ञानिकों एवं अनुसंधानकर्ताओं के द्वारा अनुसंधान करके प्राप्त किये गये हैं।

अनुसूचित जाति से सम्बन्धित अध्ययनों का सर्वक्षण:

हमारे देश में समाज का विवृत्त विवरण आदि ग्रन्थों वेदों में तथा मनुसूराति में मिलता है, पश्चात् जगत में मूल्यांकन दार्शनिक प्लेटो (427-347 B.C) सबसे पहले व्यक्ति है जिन्होंने समाज के स्वरूप की व्याख्या की उनके बाद उनके शिष्य अरस्तु (384-322 B.C) ने मनुष्य को एक व्यक्ति एवं सामाजिक प्राणी के रूप में स्वीकार किया। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में (1778-1857 A.D) फ्रॉमीसी दार्शनिक काम्प ने व्यक्ति के प्राण की व्याख्या की उन्होंने समाज के वैज्ञानिक अध्ययन का शुभारम्भ किया। प्रारम्भ में तो उन्होंने अपने इन अध्ययनों को सोशल फिजिक्स की संज्ञा दी। परन्तु आगे चलकर इसके लिये सोशियालॉजी में फिजिक्स का प्रयोग किया। काम्प के बाद हर्टव स्पेंसर ने इस क्षेत्र में कार्य किया। 1876 में उनकी प्रिसिपिल्स ऑव सोशियालॉजी नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। इनके बाद पैड्डिंग लेपले, डंकन, मैकाइबर, बोर्गाडस तथा एलरिच ने उल्लेखनीय कार्य किये।

शिक्षा के समाजशास्त्र के इतिहास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम 1833 में शिक्षा को मानवीय प्रगति के एक प्रमुख अभिकरण के रूप में लेस्टरवार्ड ने अपनी पुस्तक ‘‘डायनामिक सोशियालॉजी” (Dynamic Sociology 1883) में विश्लेषित किया। परन्तु सन् 1915-16 तक शिक्षा के समाजशास्त्र विश्लेषण 1

के स्वतन्त्र शाखा के रूप में स्थान प्राप्त न हो सका। डबल्यू.वॉलर (1932)\(^1\) और ज्नानीकी (1936)\(^2\) ने प्रथम बार शिक्षा के समाजशास्त्र का एक प्रबल स्वतन्त्र आधार प्रस्तुत किया। कार्ल मैनहिम की पुस्तक "फ्रीडम पावर एण्ड ए डिमॉक्रेटिक प्लानिंग" (Freedom Power and a Democratic Planニング) में इस स्वतन्त्र आधार को और अधिक विस्तृत किया। परन्तु शिक्षा के समाजशास्त्र के क्षेत्र में अनुसंधानक अध्ययन 1955 से ही प्रारंभ हो सका (बुख:1974:83)\(^3\) भारतर्थ में ऑक्टेट व प्रोजेक्ट स्तर पर शिक्षा के समाज में अध्ययन 1958 से प्रारंभ हुआ। परन्तु स्नातकोत्तर स्तर पर इसके पूर्व अनेक अध्ययन किये जा चुके थे। 1926 में 'सेम' ने सर्वप्रथम बालकों की शिक्षा पर पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। इसके पश्चात् जोगलेकर (1928)\(^4\) ने ऐतिहासिक दृष्टिकोण से शिक्षा और सामाजिक वर्ग के मामले का अध्ययन किया। गुप्ता (1944) ने आधुनिक शिक्षा की विकासितता का अध्ययन किया। इसके पश्चात् सात्तिरी (1950)\(^5\) और टण्डन (1950)\(^6\) ने क्रमशः द्वितीय विश्वयुद्ध के शिक्षा पर प्रभाव और "वाङ्या योजना" का अध्ययन किया। मट्टाचार्या (1951)\(^7\) ने पश्चिमी बंगाल की शैक्षणिक समस्या हीकी (1951)\(^8\) ने

शिक्षा में स्वतंत्रता और अनुशासन की समस्या को (1956)¹ ने शिक्षा और राष्ट्रीय एकता, राय (1956)² ने शिक्षा और राजनीति के परस्पर सम्बन्ध और मलिक (1957)³ ने शिक्षा और स्वतंत्र समाज के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन किया।

भारत में 1958 से लेकर अब तक शिक्षा के समाजशास्त्र के क्षेत्र में अनेक महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं, जिनकी विशद विवेचना बुध द्वारा समाप्तित अध्ययनों के सर्वेक्षण में प्रकाशित की गयी है। (बुध:1974 और 1980) इसके अतिरिक्त आई0सी0एस0एस0आर0 द्वारा प्रकाशित (A Survey of Research in Sociology and Social Anthropology. Vol.2) में भी इन अध्ययनों के सम्बन्ध में पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत की गयी है। वर्तमान अध्ययन के सौदेज्ज्वलित पृष्ठभूमि को स्पष्ट करने के लिये भारत में विद्वानों द्वारा विशेषतः अनुसूचित जाति के विद्वानों के परामर्श के आधार पर अध्ययन का प्रयोग साध्य है। अतः इनमें महत्वपूर्ण अध्ययनों का विश्लेषण नीचे किया जा रहा है।

Chandra Sekher, K. (1969) : Educational Problems of Scheduled Castes.⁴

इस अध्ययन का उद्देश्य (1) मैसूर राज्य के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों के अनुसूचित जाति के शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना, (2) यह ज्ञात करना कि शिक्षा संस्थाओं में सहभागिता और शैक्षणिक उपलब्धि किस मात्रा में शिक्षण संस्थाओं के परिवेश, पारिवारिक पृष्ठभूमि और माता-पिता के वृत्तिकोण तथा सामुदायिक

संरचना से सम्बन्धित है (3) यह ज्ञात करना कि क्या सामुदायिक संरचना और अनुसूचित जाति की विभिन्न समुदायों के सामान्य स्थिति के आधार पर अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि की व्याख्या की जा सकती है।


इस अध्ययन का उद्देश्य (1) स्वतंत्रता प्राप्ति से अनुसूचित जाति के साक्षरता और शैक्षिक प्रशासन का अध्ययन करना (2) अनुसूचित जाति एवं सामान्य जनसंख्या के शैक्षिक प्रगति की तुलना करना (3) उत्तर प्रदेश के अनुसूचित जाति के शैक्षिक प्रगति का अन्य राज्यों के शैक्षिक प्रगति से तुलना करना (4) उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में अनुसूचित जाति के शैक्षिक प्रगति के अन्तराल का पता लगाना तथा विभिन्न अनुसूचित जातियों के मध्य शैक्षिक विकास में पाये जाने वाले अन्तर का पता लगाना (5) विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का अनुसूचित जाति के शैक्षिक विकास में योगदान का मूल्यांकन करना है।

Chitnis, S. (1974) " Literacy and education enrolment among the Scheduled Castes of Maharashtra.

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह ज्ञात करना कि (1) केंद्र और राज्य के द्वारा अनुसूचित जाति उत्थान के लिये जो प्रयत्न किये जा रहे हैं, क्या उनसे अनुसूचित जाति के सदस्य संबंधान द्वारा प्रदत्त समानता के अधिकार के निकट पहुँच रहे हैं ? (2) क्या स्कूल और कॉलेज में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का प्रतिशत सामान्य जनसंख्या के प्रतिशत के अनुरूप है ? (3) क्या विभिन्न पादयोग्यों और शिक्षण संस्थाओं में उनका विवरण सामान्य जनसंख्या के अनुरूप है ? (4) क्या अनुसूचित

जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि सामान्य विद्यार्थियों के अनुरूप है ? और (5) क्या शिक्षा ने अनुसूचित जाति को आर्थिक एवं सामाजिक गतिशीलता के मार्ग में बढ़ने के योग्य बना दिया है ? या जाति उनके प्रगति के मार्ग में अभी भी बाधक बनी हुई है।

Dubey, S.M. (1974) : The study of Scheduled Caste and Scheduled tribe college Student in Assam.¹

यह अध्ययन आसाम के अनुसूचित जाति के कालेज विद्यार्थियों के सामाजिक –आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करने के लिये और यह देखने के लिये कि किस प्रकार शिक्षा उनकी आकांक्षाओं, उपलब्धियों जीवन शैली, सामाजिक क्रियाकलापों में सहभागिता दृष्टिकोण, सामाजिक स्थिति इत्यादि को प्रभावित कर रहा है।

Goyal, S.K. (1974) : The study of Scheduled Castes Student of College in East U.P.²

यह अध्ययन पूर्वी उत्तर प्रदेश के कालेज स्तर के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि तथा शैक्षणिक उपलब्धि एवं आकांक्षाओं का विश्लेषण करता है इस अध्ययन में वराणसी, गोरखपुर, फूजीबाद और देवरिया जिले के 16 कालेज के 230 विद्यार्थियों और 64 अध्यक्षों को सम्मिलित किया गया है इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि (1) उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति की संख्या सबसे अधिक है (2) सामान्य जनसंख्या की तुलना में अनुसूचित जाति के साक्षात्कार का स्तर अत्यन्त निम्न है तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में यह निम्नतम है (3) माता पिता का शैक्षणिक स्तर साथ ही साथ युवा पीढ़ी का शैक्षणिक स्तर अत्यन्त निम्न है (4) अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्र देंगे, तथा कला विषय ग्रहण किया है (5) अधिकांश विद्यार्थियों की शैक्षणिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है।


यह अध्ययन कर्नाटक राज्य के 260 अनुसूचित जाति के कालेज स्तर विद्यार्थियों और 113 कालेज और अध्यापकों पर किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि एवं शैक्षणिक समस्याओं का अध्ययन करना है अध्ययन से निम्न तथ्यों पर प्रकाश पड़ता है। 1) अनुसूचित जाति के विद्यार्थी कालेज में निर्धारित समय से अधिक समय तक रहते हैं। 2) अधिकांश विद्यार्थी गाँव में रहते हैं जबकि शिक्षण संस्थान संस्थान नगर में है अतः वे या तो होस्टल में रहते हैं या गाँव से प्रतिदिन पढ़ने आते हैं। 3) छात्रावास में अत्यधिक भीड़ रहने की समस्या पायी गयी है। 4) अनेक विद्यार्थी छात्रवृत्ति के वितरण से असन्तुष्ट हैं।

Raj Gopalan, C. (1974) : Educational Progress and Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribe Student in Karnataka (High School)

यह अध्ययन कर्नाटक राज्य के 196 अनुसूचित जाति के हाईस्कूल के विद्यार्थियों और 134 अध्यापकों से प्राप्त सूचना पर आधारित है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि 1) 30 प्रतिशत विद्यार्थी छात्रावास में निवास करते हैं। 2) अधिकांश विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अस्तरोपजनक है। 3) पारिवारिक कार्य इनके अध्ययन के गर्म में बाधक है। 4) अधिकतर विद्यार्थी प्राइवेट ट्यूशन की आवश्यकता का अनुभव करते हैं। 5) विद्यार्थियों को माता-पिता का प्रोत्साहन प्राप्त है।

1- Parvathamma, C. : The Study of Scheduled Caste and Scheduled Tribe College student in Karnataka, Department of Post-Graduate studied and Research in Sociology, Mysoor University , 1974 (I.C.S.S.R.)
यह अध्ययन बिहार के 225 अनुसूचित जाति के कालेज स्तर के विद्यार्थी
तथा 144 अध्यापकों पर आधारित है इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि
(1) अनुसूचित जाति के 30 प्रतिशत विद्यार्थी विद्याहित है (2) केवल 17 प्रतिशत
विद्यार्थियों ने विज्ञान विषय ग्रहण किया है। (3) कालेज स्तर के विद्यार्थियों को
पारिवारिक बोझ का अधिक सामना नहीं करना पड़ता (4) अधिकांश विद्यार्थियों की
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है (5) अधिकांश विद्यार्थी राजनीति
के दृष्टिकोण से अधिक जागरूक व सक्रिय हैं।

Singhi, N.K. (1979) : Education and Social Change

इस अध्ययन द्वारा यह देखने का प्रयत्न किया गया है कि राजस्थान के
अनुसूचित जाति के विद्यार्थी अनुसूचित जाति के कालेज स्तर के विद्यार्थी
विद्याहित की अनुसूचित जाति के कालेज स्तर के विद्यार्थी विद्याहित की
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है। अध्ययन द्वारा विद्यार्थी
अनुसूचित जाति के कालेज स्तर के विद्यार्थी अनुसूचित जाति के विद्यार्थी
विद्याहित की अनुसूचित जाति के कालेज स्तर के विद्यार्थी विद्याहित की
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है। अनुसूचित जाति के
विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है। अनुसूचित जाति के
विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है। अनुसूचित जाति के
विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है। अनुसूचित जाति के
विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी अथवा कालेज स्तर के विद्यार्थी
शैक्षणिक और व्यावसायिक आकांक्षा अत्यन्त उच्च है।


1- Sachchidanand : Education Among Scheduled castes and scheduled Tribe in Bihar
(College Student), 1974 (I.C.S.S.R.)
खरे 1984 ने लखनऊ के नगरीय क्षेत्र में चमारों की सामाजिक पृष्ठभूमि का मूल्यांकन करते हुये अस्पृश्यता की अवधारणा का विवेचन किया है अपने अध्ययन के आधार पर उन्होंने नगरीय क्षेत्र में चमार जाति के परिवारों में दो वर्गों का उल्लेख किया है एक वर्ग तो राज्यरत संस्थानिक जाति व्यवस्था में जीवन यापन कर रहा है। तो दूसरा वर्ग आधुनिक लोकतंत्र की सुनिवेशों का उपयोग करते हुये राज्य की मुख्यधारा से जुड़ा हुआ है इन अस्पृश्य जातियों की सांस्कृतिक वैचारिकी के विश्लेषण हेतु खरे ने ही इन जातियों के सांस्कृतिक सिद्धांतों और विचारों का विश्लेषण किया है। अपने अध्ययन के आधार पर खरे ने यह निष्कर्ष प्रस्तावित किया है कि लखनऊ के चमारों ने बौद्धिक और वैचारिक माध्यमों से अपनी सांस्कृतिक निर्भरताओं को कुछ सन्दर्भों में एक विशिष्ट तरीके से दूर किया है। उनकी सामाजिक दृष्टि ने उच्च जातियों को उनके प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण विकसित करने के लिये गाथा किया है। विश्वासथान और नरसिंह रैंडी 1985 ने अनुसूचित जातियों की शैक्षणिक उपलब्धि के सन्दर्भ में किये गये अपने अध्ययन को आधार प्रदेश की अनुसूचित जातियों पर केंद्रित किया है उच्च सामाजिक गतिशीलता के लिये औपचारिक शिक्षा के महत्व को अनुसूचित जातियों के सन्दर्भ में विश्लेषित करते हुये इन्होंने यह स्पष्ट किया है कि अनुसूचित जातियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार के लिये यह आवश्यक है कि इन जातियों के परम्परागत संकृति विचारधारा में परिवर्तन लाया जाये।

सामाजिक संरचना में मूलभूत परिवर्तन के लिये इस जाति के सदस्य कभी भी सक्रिय नहीं पाये गये। अतः जब तक समाज में संरचनात्मक परिवर्तन नहीं किया जायेगा, इन जातियों के प्रसिद्धिति में सुधार कल्पना लगता है, और वे शैक्षणिक क्षेत्र में पिछड़े रहेंगे।

Vakil, A.K., 1985, 'Reservation Policy and Scheduled Caste in India', Ashish Publications House, New Delhi.¹

वकील 1985 ने अनुसूचित जातियों के लिये आरक्षण के सन्दर्भ में किये गये अपने अध्ययन के अन्तर्गत इन जातियों के सदस्यों की शैक्षणिक एवं आर्थिक दशाओं का मूल्यांकन किया है। इस अध्ययन से प्राप्त तथ्य यह स्पष्ट करता है कि आरक्षण नीति की समय-समय पर परिवर्तन किया जाना चाहिये। एक निर्देशित आय स्तर वाले अनुसूचित जाति के परिवारों को ही इसका लाभ दिया जाना चाहिये। अनुसूचित जाति के सदस्यों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करते हुये वकील ने यह स्पष्ट किया है कि 1978-83 की केंद्र सरकार की योजना जो अनुसूचित जाति की आर्थिक परिस्थितियों के सुधार के लिये बनायी गयी थी असफल रही है जिसका कारण अनुसूचित जाति के समस्याओं के निराकरण हेतु नियोजित उपायों के प्रयोग से सम्बन्धित है। केवल नौकरियों में आरक्षण और आर्थिक कार्यक्रमों में लागत दर वृद्धि कर देना ही अनुसूचित जाति के वास्तविक उत्थान का सूचक नहीं है। अपितु व्यावसायिक भिन्नताओं के कारण इन जातियों की असमान आर्थिक दशाएं भी वे महत्वपूर्ण कारण है जो उनकी परिस्थिति को सुधारने के लिये प्रमुख अवरोधक मानी जा सकती है। सामान्यतः इन जातियों के लोग निम्न स्तरीय लाभ वाले व्यवसायों में लगे हुये हैं। उनके द्वारा स्वयं नया व्यवसाय शुरू करने की स्थितियां भी आर्थिक

कारणों से प्रतिबंधित है। राज्य सरकारों की मूम्प सुधार नीति भी इन जातियों के बहितों को संरक्षित करने में असफल हुई हैं।


नेताजी सरदार वल्लभपाली साहिला द्वारा सम्पादित पुस्तक Ambedkar and Nation-Building में अनुसूचित जाति एवं जनजाति के जीवन से समबंधित मिश्रित विषयों को डॉ. वी.आर. अमेडकार के विचारों के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। इसके अन्तर्गत समाज के दलित वर्ग के जीवन के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक जीवन के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। पुस्तक के अन्तर्गत विभिन्न लेखकों ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति के शैक्षिक अनुकूलना आर्थिक पिछड़ापन एवं जातिगत संरचना में दीन-हीन भावना आदि का विवेचना किया गया है। इसमें यह भी स्पष्ट किया गया है कि इसकी दशा में सुधार तभी सम्भव है जब आर्थिक के द्वारा इन्हें विभिन्न प्रकार की सुविधाओं को प्रदान किया जाये तथा उनके लिये विकास के द्वारा तभी खुल पा सकते हैं जब उनके जीवन के विभिन्न वस्तुओं से समबंधित अभाव को दूर किया जाये। अतः अनुसूचित जाति एवं जनजाति का समाज के सवर्णों के साथ विकास तभी सम्भव है जब उन्हें उन सुविधाओं को प्रदान करने की व्यवस्था की जाये जिससे वे वृद्धि रहें हैं।

इस प्रकार अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं समस्याओं से समबंधित पूर्ववर्ती अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति और जनजाति के विद्यार्थियों के शैक्षिक अभिवृत्ति, शैक्षिक आकांक्षा, व्यवसायिक आकांक्षा और सामाजिक मूल्यों से समबंधित अनुभवात्मक

अध्ययनों की मात्रा कम है।

चित्रकूटधाम मण्डल का बाँदा जनपद के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की आकांक्षाओं और अभिवृद्धियों तथा सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित अध्ययन नहीं हुआ है। इस दृष्टि से अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों से सम्बन्धित अध्ययन एक महत्वपूर्ण अध्ययन है।